RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 41 अंक 40 हल्द्वानी सम्वत् 2082 सोमवार 9 मार्च 2026 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

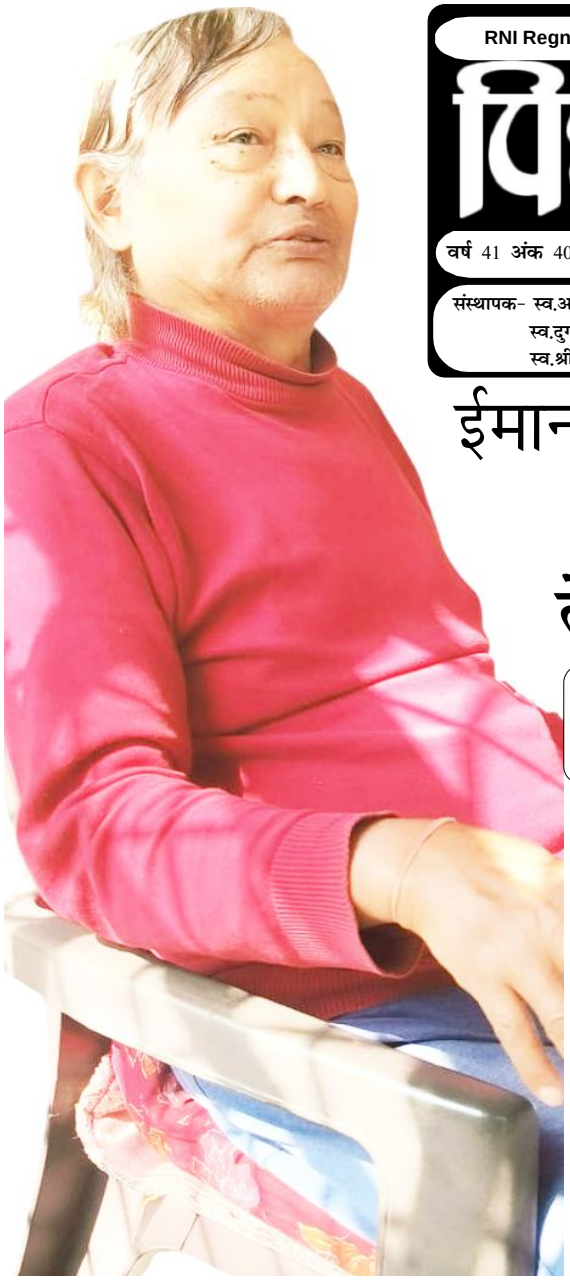

ईमानदार कोशिश हो, रास्ते बनते हैं

सत्यवान सिंह जंगपांगी से बातचीज

तेजम का बचपन बहुत सिखा गया

बुआ गौरी देवी, मंगल वृजवाल, भवान सिंह जंगपांगी का संरक्षण रहा

1966 हाईस्कूल में प्रथम आने वालों में ईश्वर सिंह पांगती, राजेश जोशी भी थे

जौंकला नदी पर छल लगने पर पूजा-पाठ का विधान ही ठीक करता है

कार्यालय प्रतिनिधि

कल्पना करो आप एकदम विपरीत परिस्थिति में हैं और रास्ता नहीं सूझ रहा हो और ऐसे में कोई चमत्कार आपका रास्ता बना दे। ऐसा ही कुछ हुआ सत्यवान सिंह जंगपांगी के साथ। आगे बढ़ने का रास्ता तो बना लेकिन इनकी सहजता आज भी उसी रूप में दिखाई देती है।

अपने समय के प्रतिष्ठित व्यक्ति हुए हरमल सिंह जंगपांगी। इनके सुपुत्र थे खुशाल सिंह जंगपांगी। और फिर इनके तीन पुत्र- ललित सिंह (मास्साब) सड़क सिंह, सत्यवान सिंह हुए। एकदम विपरीत धारा निकले इन भाईयों ने घोर श्रम के साथ मुकाम प्राप्त किया।

बांसबगड़ रोड में बमौरी(नाचनी) में जन्मे सत्यवान सिंह के सिर से माता पिता का साया बचपन में ही उठ गया। जंगपांगी बन्धु जीवन-जगत के कड़वे सच से जूझ रहे थे, इसमें सत्यवान तो एकदम नादान थे। ऐसे में तेजम में रहने वाली इनकी बुआ गौरी देवी रावत अपने साथ ले गई। इनका बचपन तेजम में बीता। अपने अतीत की स्मृतियों में जाते हुए श्री जंगपांगी कहते हैं- तेजम का बचपन बहुत सिखा गया। बुआ जी गौरा देवी, मंगल सिंह वृजवाल, भवान सिंह जंगपांगी सहित सभी सहायकों का स्मरण वह करत हैं। सत्यवान बचपन में पढ़ने के लिये अपने अन्य साथियों के साथ रसियाबगड़ तख्ती लेकर जाते। बचपन की खट्टी-मीठी यादों में वह बताते हैं कि क्वीटी से झोकला नदी आती है और वहाँ घट में आटा पिसाने लोग जाते थे। महिलाएं पानी के लिये भी जाती थीं। एक बार उन्होंने भी बुआ से नदी में जाने की जिद की तो उन्हें आश्चर्य हुआ कोई व्यक्ति उनकी ओर चला आ रहा है। बचपन की इस प्रकार की अनोखी घटना को वह भुलाए नहीं भूलते हैं। इसके बाद एक बार वह स्वास्थ्य सम्बन्धी दिक्कत महसूस करने लगे तब पूजा-पाठ के साथ ठीक हुए। मान्यता है कि उस क्षेत्र में जौंकला नदी का छल बाहर से आने वालों परर लगता है। ऐसे में पूजा-पाठ का विधान ही उसे ठीक करता है।

इस बीच इनके बड़े भाई ने एसटीसी किया और उनकी पोस्टिंग मुवानी-दवानी प्राइमरी स्कूल में हुई। ललित मास्साब नाम से चर्चित इनके भाई इन्हें अपने साथ ले गये। इस प्रकार पढ़ाई का दूसरा

शेष पृष्ठ 2 पर

भारत के मीलपत्थर

मधुर है बृहदारण्यकोपनिषद का चिन्तन

सूर्यकान्त बाली

बृहदारण्यकोपनिषद- यह नाम ही सुनने वालों को रोमांचित कर देने के लिए काफी है। इसी उपनिषद में वह गार्गी है जिसने याज्ञवल्क्य जैसे महादार्शनिक को राजा जनक की ब्रह्मसभा में विकट चुनौती दे दी थी। इसी उननिषद में वह मैत्रेयी है जिसने अपने पति याज्ञवल्क्य को वह आत्मतत्व बताने को मजबूर कर दिया था जिसका अधिक गम्भीर मनन करने के लिए वह अपनी सारी सम्पदा छोड़कर वन में जाने को तैयारी कर रहे थे। इसी उपनिषद में, जाहिर है, वे याज्ञवल्क्य है हैं ही जिन्होंने जनक की ब्रह्मसभा में सर्वश्रेष्ठ ब्रह्माज्ञ होने की चुनौती को स्वीकार किया और अपना वर्चस्व स्थापित करने से पहले ही सोना मढ़े सींगों वाली वे हजार गउएँ अपने आश्रम में भिजवा दी जो असलियत में उन्हें शास्त्रार्थ जीतने के बाद ही मिलनी चाहिए थीं। कितने आत्मविश्वास से भरे थे याज्ञवल्क्य और जनक समेत नौ नौ ब्रह्मवेत्ताओं पर अपने विचारों की छाप जमा देने वाले उन याज्ञवल्क्य का वह लम्बा सम्वाद कितना रोमांचक रहा होगा।

लेकिन बृहदारण्यक नाम सुनने वालों को रोमांच तभी तो होगा जब उन्होंने उसका नाम भी सुन रखा होगा। आप सारे भारत का भ्रमण कर आइए और गिन लीजिए कितने भारतवासी अपने देश की इस विराट दार्शनिक विरासत के बारे में जानते हैं। ईशोपनिष्ज्द को जानने वाले आपको फिर भी कई मिल जाएँगे। पर बृहदारण्यकोपनिषद? इस महाग्रन्थ को जानने वालों को आप चाहें तो अपनी उंगलियों पर गिन सकते हैं। क्यों है ऐसा? वही लापरवाही जो हमें अपनी महानता को जानने और पहचानने से वंचित रखती है। अपनी प्रताड़ना और अपनी निन्दा करने में मजा आने लगा है। बस वही करते रहते हैं। हालत यह है कि कभी हम गार्गी और मैत्रेयी का नाम किसी प्रसंग में लेते भी हैं तो इन महानारियों को हम वैदिक मन्त्रकार के रूप में याद करने लग जाते हैं जबकि इनका प्रादुर्भाव ही वैदिक मन्त्र रचना बन्द होने के सौ-पचास साल बाद हुआ है। जो लोग बृहदारण्यकोपनिषद के बारे में जानते होंगे वे यकीनन ऐसी गलती नहीं करेंगे।

मजेदार यह है कि उपनिषदों की श्रृंखला में जो दो उपनिषदें सर्वाधिक प्राचीन हैं वे उपनिषदों के रूप में लिखी ही नहीं गई थीं और उन्हें उनकी विषयवस्तु की खासियत की वजह से बाद में उपनिषद का दर्जा दे दिया गया। एक थी ईशोपनिषद जो वास्तव में यजुर्वेद का चालीसवाँ (आखिरी) अध्याय है जिसके बारे में हम अपने पिछले आलेख में काफी विस्तार से लिख आए हैं। दूसरी है बृहदारण्य कोपनिषद जो असलियत में शतपथ ब्राह्मण का अन्तिम अंश है पर जिसमें आत्मतत्व का विवेचन इस कदर प्रामाणिक ढंग से किया गया है कि उसे बाद के उपनिषदकार उपनिषद माने बिना रह नहीं सके। इस उपनिषद के नाम से ही जाहिर है कि पहले आरण्यककारों ने उसे बृहदारण्यक कहकर अपने साहित्य का हिस्सा बनाया होगा, लेकिन बाद में उपनिषदकारों ने इस खास किताब को उपनिषदों के पाले में खींच लिया और तब से आज तक वह उसी पालें में है।

तो क्या है बृहदारण्यकोपनिषद में? चूँकि मूलत: यह पुस्तक शतपथ ब्राह्मण है, इसलिए इसके शुरू के हिस्से में ब्राह्मण ग्रन्थों के चरित्र के मुताबिक यज्ञों की कई तरह से व्याख्या की गई है। बस जैसे ही आप इस उपनिषद का पहला पन्ना खोलेंगे, आपको मिलेगी यज्ञ में पूजे जाने वाले अश्व यानी घोड़े के विभिन्न अंगों की आध्यात्मिक और रहस्यपूर्ण व्याख्या। प्रसंग अश्वमेघ नामक यज्ञ में काम अपने वाले घोड़े का है। उपनिषदकार कहता है कि 'यह जो प्रात: में हमें उषा के दर्शन हो रहे हैं वह उषा नहीं, उस अश्व का सिर है, सूर्य उसकी आँख या आँखें हैं, निरन्तर बहने वाली वायु इस घोड़े के प्राण हैं, वैश्वानर नामक अग्नि इसका मुँह है, संवत्सर इसका शरीर है, पृथ्वी इसके पैरों के तलवे हैं जहाँ नाल ठोकी जाती है।' यह वर्णन काफी लम्बा है और जाहिर है कि इस वर्णन के जरिए अश्व हमें नहीं समझाया जा रहा, बल्कि इसे समस्त विश्व का प्रतीक बनाकरअश्व के बहाने हमें कुछ और ही बताया जा रहा है और जो बताया जा रहा है वह क्या है, इस बारे में हर पढ़ने वाले को अपनी व्याख्या करने की छूट है। पढ़ने वालों को अजीबोगरीब लगने वाला यह नमूना हमने यहाँ इसलिए दिया ताकि मालूम पड़े कि कैसे बृहदारण्यक में यज्ञ को दार्शनिकता के ताने बाने में लपेटकर हमारे सामने पेश किया गया है।

बृहदारण्यकोपनिषद की विशेष ख्याति उस ब्रह्मसभा के कारण है जो राजा जनक के राजदरबार में सजी थी और जहाँ याज्ञवल्क्य ने जनक और गार्गी समेत नौ दार्शनिकों पर अपने विचारों और चिन्तन का वर्चस्व जमाया था। उसके बारे में हम कुछ लिखें, इससे पहले इस उपनिषद में मिलने वाले कुछ और विचारों से परिचित हो लिया जाए। बृहदारण्यकोपनिषद अध्यायों में बँटा है और अध्याय जिन उप-अध्यायों में बँटे हैं

शेष पृष्ठ 5 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

बसाने और उजाड़ने का खेल बन्द कर हकीकत को जानो

हल्द्वानी में रेलवे की भूमि को लेकर लम्बे समय से चल रहे विवाद के बाद सुप्रीम कोर्ट ने रास्ता दिखाते हुए कह दिया कि रेलवे की विस्तार और विकास परियोजनाओं के मद्देनजर सार्वजनिक भूमि पर बसे लोगों जगह खाली करनी होगी। सरकार की पुनर्वास नीति के तहत वहाँ जाना होगा जहाँ उनको जगह या घर मुहैया कराया जाएगा।

शीर्ष अदालत ने फैसले में उत्तराखण्ड हाईकोर्ट के दिसम्बर 2022 के आदेश को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर आदेश दिया कि सार्वजनिक जमीन पर कथित तौर पर अवैध कब्जा कर कई वर्षों से रह रहे हजारों परिवारों को हटना होगा। आदेश के बाद यह तो साफ हो चुका है कि वनभूलपुरा में रेलवे के साथ ही राज्य सरकार की करीब 30 हेक्टेयर सरकारी जमीन पर कब्जाकर बैठे लोगों को हटना है। इन लोगों का सामाजिक और आर्थिक सर्वेक्षण के बाद उनके विस्थापन का रास्ता साफ होगा। इस बीच बनभूलपुरा क्षेत्र में पुलिस की चौकसी के अलावा प्रशासन विस्थापन के लिये युक्ति बना रहा है।

इस पूरे प्रकरण के बाद यह भी समझ आता है कि प्राकृतिक न्याय तो यही है कि जिसने जन्म लिया उसे हवा, पानी, रहने को जमीन मिले। लेकिन तय व्यवस्थाओं के साथ कुछ और नियम भी लागू कर दिये गये। ऐसे में मनमर्जी नहीं की जा सकती है। होता यह है कि कोई अपने रोजगार, कोई अपने कारण, कोई किसी के कारण यत्र-तत्र अपना गुजारा करने लगता है। इतना तो ठीक है। इससे आगे जब राजनीति इसमें घुस जाती है और दबंगाई होने लगती है, मनमर्जी का पाठ पढ़ाया जाता है.....गड़बड़ी होना ही है। ऐसा ही रेलवे की जमीन को लेकर भी है। हजारों लोगों के बसने तक सरकारों ने चुप्पी साधे रखी और फिर पीढ़ी-दर-पीढ़ी रह रहे लोगों को हटने की बात होने लगी। इसमें भी अपनी-अपनी राजनीति। इन सारी हकीकत को जानना भी जरूरी है। कभी भी बसाने और उजाड़ने का ऐसा खेल न हो।

देश-विदेश की प्रमुख घटनाएं

भारतीय सौर उत्पादों पर प्रतिपूर्ति शुल्क

नई दिल्ली। अमेरिका ने भारत पर अनुचित सब्सिडी दिए जाने का आरोप लगाते हुए कुछ भारतीय सौर उत्पादों के आयात पर 125.87 प्रतिशत का क्षतिपूर्ति शुल्क लगाया है। भारत के साथ अमेरिका ने इंडोनेशिया और लाओस से आयातित 'क्रिस्टलाइन सिलिकॉन फोटोवोल्टिक सेल' पर भी अलग-अलग शुल्क दरों की घोषणा की।

भारतीयों के लिये ई-वीजा अनिवार्य

लन्दन। ब्रिटेन ने डिजिटल यात्रा प्रणाली लागू करते हुए भारतीय यात्रियों के लिए अनिवार्य ई-वीजा और बिना वीजा वाले आगन्तुकों के लिये इलेक्ट्रानिक ट्रैवल ऑथराइजेशन (ईटीए) आवश्यक रूप से शामिल किया है। यह नई प्रक्रिया पिछले कुछ वर्षों में चरणबद्ध ढंग से लागू किये गए कार्यक्रम के तहत कागज आधारित वीजा स्टिकर की जगह लेगी।

ब्रिटेन : मन्दिर बन्द होने का खतरा

लन्दन। पूर्वी ब्रिटेन के पीटरबरो शहर स्थित 40 साल पुराने 'भारत हिन्दू समाज मन्दिर' और कम्युनिटी सेन्टर पर बन्द होने का खतरा मंडरा रहा है। स्थानीय पीटरबरो सिटी काउंसिल ने उस ऐतिहासिक भवन को बेचने का निर्ण लिया है, जिसमें यह मन्दिर 1986 से संचालित है।

पाकिस्तान का अफगान को खुला ऐलान

काबुल। पाकिस्तान पर अफगानिस्तान के जवाबी हमले के बाद दोनों देशों में जंग तेज हो गई है। अफगानिस्तान की ओर से हुए हमलों के बाद पाक ने अफगान के खिलाफ ऑपरेशन गजब लिल हक की घोषणा करते हुए उसकी राजधानी काबुल पर हवाई हमले किए।

अभिभावकों को सतर्क करेगा इंस्टाग्राम

वाशिंगटन। सोशल मीडिया मंच इंस्टाग्राम ने घोषणा की है कि यदि किशोर उपयोगकर्ता आत्महत्या या खुद को नुकसान पहुंचाने से सम्बन्धित शब्दों को बार-बार खोजते हैं तो वह नके अभिभावकों को सूचित करेगा। यह अलर्ट केवल उन अभिभावकों को भेजे जाएंगे जो इंस्टाग्राम के पैरेंटल सुपरविजन में हैं।

झुग्गी की छात्रा को आस्ट्रेलिया में वजीफा

नई दिल्ली। पश्चिमी दिल्ली के पीरागढ़ी स्थित झुग्गी बस्ती की एक युवती को आस्ट्रेलिया में स्नातकोत्तर में पढ़ाई के लिए छात्रवृत्ति मिली है।

फसक

दाज्यू, मारधाड़-खून-खच्चर आम बात हो गई ठैरी

एक-दूसरे की धमतड़ी करने में कोई कसर नहीं छोड़ रहा है बल

दाज्यू, घनघोर कलजुग आ गया है। जिस ओर देखो घन्तर चल रहे हैं और हन्तर बसराए जा रहे हैं। खटीमा में गोरखा रेजिमेंट के सैनिक की 60 वर्षीय ईजा की बेरहम हत्या की गई। हरियाणा के कथित सन्त रामपाल की अनुयायी जानकी का खून से लथपथ शव उनके घर पर मिला। दाज्यू, डर के इस वातावरण में क्या जो कहें? इससे पहले दिनेशपुर में पारिवारिक विवाद में सास को पीट-पीटकर हत्या के मामले में बहू को जेल भेजा गया है। 70 वर्षीय महिला संध्या शाह के पुत्र प्रसन्नजीत ने पुलिस को बताया कि उसका अपनी पत्नी सुरभि से झगड़ा हो गया तो उसने अपने मायके से लोगों को बुला दिया। उन लोगों ने कमरे में बन्द कर पिटाई की जिसमें वह घायल हो गये और माता की मौत हुई।' दाज्यू, मारधाड़-खून-खच्चर आम बात हो गई ठैरी। हरिद्वार के आकाशदीप कॉलोनी में राजेश प्रजापति नामक यवुक ने अपनी लाइसेंसी पिस्टर से गोली मारकर आत्महत्या कर ली। दाज्यू, गदरपुर में चल रहे बहु उद्देशीय शिविर में एक चाय विक्रेता आत्महत्या की कोशिश करने लगा, पुलिस ने उसे पकड़ लिया।

कलजुग के चरम पर आते ही ऐसा ही कुछ होने लगता है जैसा इन दिनों में हो रहा है। एक-दूसरे की धमतड़ी करने में कोई कसर नहीं छोड़ रहा है बल। किच्छा में निकाह का झांसा देकर नाबालिक सु दुष्कर्म करने वाला पुलिस ने पकड़ा है। बाजपुर के बन्नाखेड़ा में एक महिला से दुष्कर्म कर वीडियो वायरल करने की धमकी दी गई बल। दाज्यू, रुद्रपुर में भी ऐसा ही घपला हुआ। सरस मेले से लौट रही महिला की दो छोकरों ने इज्जत लूट ली। गैंगरेप का साजिसकर्ता महिला का देवर था बल। दाज्यू, प्रदेश में महोत्सवों की ऐसी बाढ़ आ चुकी है कि.....। अब जाँच चल रही है। सितारगंज में भी पड़ोसी ने घर में घुसकर दुष्कर्म का प्रयास किया है। मामला दर्ज कराने वाली महिला ने बताया कि धारदार हथियार से हमला भी हुआ। दूसरी घटना ग्राम उकरौली की है जिसमें घरेलू झगड़े में भाभी ने फन्दा लगाया और ननद ने जहर गटका। अस्पताल ले गये तब जाकर बचाव हुआ। हल्द्वानी की तो पूछो मत.....कुकरयोव हो रही ठैरी। काठगोदाम में दो दो बालकों ने 15 साल की बालिका को शराब पिलाकर दुष्कर्म कर दिया। रुद्रपुर में युवा व्यापारी ध्रुव चावला के सिर पर गोली लगने से मौत हो गई। मामला हत्या का है या आत्महत्या सब लोग यही जानना चाहते थे।

दाज्यू, खून-खच्चर-मारधाड़ की अब पूछो ही मत। देहरादून में शिक्षा निदेशक पर विधायक के सामने हमला होना सामान्य बात तो हो ही नहीं सकती। विधायक काऊ उर्फ उमेश शर्मा के खिलाफ खूब प्रदर्शन भी हो चुके हैं लेकिन क्या जो हो जाएगा? विधायक मूंछ में ताव देकर घूम रहे हैं बल। कहने को उन्होंने माफी मांग ली है। बागेश्वर के बैजनाथ थाना क्षेत्र के जैसर गांव में सास-ससुर के साथ झगड़े में बहू ने अपनी 22 दिन की बच्चे की गला दबाकर हत्या कर दी। हरिद्वार के रानीपुर पुलिस ने बोर्ड परक्षा में फर्जी प्रवेशपत्र बनाकर छात्रा से परीक्षा दिलाने वाले प्रधानाचार्य को पकड़ लिया है बल।

-तुम्हारा भुला झकरुवा

ईमानदार कोशिश.....

प्रथम पृष्ठ का शेष

चरण शुरू हो गया। मास्साब का साईपोलू में स्थानान्तरण हो गया। उस समय सत्यवान कक्षा चार में पढ़ते थे और दुम्मर आ गए। दरांती प्राइमरी स्कूल में जाने लगे। तब वासुदेव जी वहाँ हैडमास्टर थे। कक्षा पाँच की बोर्ड परीक्षा देने पुंगराऊ गये और मामा के घर तोराथल में रहे। पांखू में स्कूल टॉप करने के बाद घोरपट्टा आ गये। इसके बाद मामा मंगल सिह वृजवाल के घर रहते हुए कक्षा आठ तक पढ़ाई की। इससे आगे तिकसैन में भवान सिंह जंगपांगी के वहाँ रहकर हाईस्कूल किया। 1966 के हाईस्कूल में जीआईसी मुनस्यारी से सत्यावान जी के साथ ईश्वर सिंह पांगती, प्रधानाचार्य के सुपुत्र राजेश जोशी, नेत्र सिंह पंचपाल भी प्रथम श्रेणी में पास हुए थे। यहीं से इण्टरमीडिएट करते हुए सत्यवान जी इंजीनियरिंग में सफल हो गये लेकिन स्थिति-परिस्थिति ने उन्हें रोका और वह बीएससी करने अल्मोड़ा आ गए। उन दिनों टेलीफोन विभाग में इंजीनियरिंग सुपरवाइजर के पद के लिये चयनित होने पर वह टेलीफोन ट्रेनिंग सेन्टर कलकत्ता गये। पहली बार काठगोदाम से ट्रेन में बैठने का कौतुहल उन्हें खूब याद है। बताते हैं- आते समय ट्रेन में उनका बैग चोरी हो गया, जिसकी रिपोर्ट भी कराई गई। इससे आगे बरेली में ट्रेनिंग हुई और पहली पोस्टिंग 1972 में हुई। तब पिथौरागढ़ में विभाग के ईएसटी इंचार्ज नरेन्द्र पांगती (मिलम निवास, हल्द्वानी वाले) थे। विभाग के ईएस कैरियर इंचार्ज के रूप में सत्यवान सिंह ने चार्ज संभाला। सन् 1974 में ईए कंट्रक्शन को बड़ी जिम्मेदारी विभाग के पास थी। पिथौरागढ़, चर्मा, मिर्थी में आईटीबीपी के लिये संचार की लाइन बिछनी थी। साथ ही अस्कोट से कर्णप्रयाग लाइन खिंचनी थी। सन् 1976 में टेलीफोन विभाग के इस महत्वपूर्ण कार्य को सम्पन्न कराने के बाद जंगपांगी जी सन् 1981 तक श्रीनगर रहे। उन दिनों भी थल से नाचनी वगैरह पैदल आवागमन ज्यादा होता था। 1985 में प्रमोशन में इन्हें मुजफ्फरनगर जाना पड़ा। फिर सन् 2000 में नैनीताल के बाद अल्मोड़ा में रहे। 2011 में दूरसंचार विभाग के उपमहाप्रबन्धक पद से सेवानिवृत्त हुए। वर्तमान में जोहार नगर हल्द्वानी में निवास करते हैं।

अपने बचपन से युवावस्था तक जितना हाल-बेहाल पहाड़ का श्री जंगपांगी ने देखा और अनुभव किया, एक अधिकारी के रूप में दूरसंचार की व्यवस्था सीमान्त के अन्तिम गाँव तक जुटाने का यत्न किया और सफल रहे। आज भले ही संचार के तमाम द्रुत साधन हैं लेकिन उस समय पर यह सब कल्पना था जब फोन पर हलो-हलो करने के लिये निर्भर रहना होता था। अपने विभागीय कार्य के अलावा सामाजिक गतिविधियों में हमेशा से तत्पर रहने वाले सत्यवान सिंह जी जोहार सहयोग निधि से लेकर कई संस्थाओं से जुड़े रहे हैं। हरि प्रदर्शनी के लिये सक्रिय रहने के अलावा पहाड़ से लेकर मैदान तक अपनों से सम्पर्क और हर किसी की खुशी के लिये टोह लेने वाले जंगपांगी जी की वही ईमानदार कोशिश आज तक जारी है जो उन्होंने बचपन में शुरू की थी।

जाकुर नदी पर गुफा की खोज

थल/मुनस्यारी। तेजम तहसील के अन्तर्गत थल-मुनस्यारी मार्ग पर काकड़शिला (कक्कड़ सिंह बैंड) के समीप जाकुर नदी तट पर स्थित प्राकृतिक गुफा मिली है। गन्धक मिश्रित पहाड़ के भीतर बनी यह गुफा अपनी अपनी संरचना के लिये चर्चा में है। गुफा के मुहाने पर एक प्राकृतिक तालाब है, जिससे दूर-दूर तक गन्धक की तेज महसूस होती है। इस गुफा की खोज काफल हिल संस्था और हरेला समिति के संयुक्त अभियान के तहत की गई। खोज अभियान में तरुण महरा, 9 वर्षीय मानस महरा, सोनू और पंकज शामिल थे। स्थानीय लोग जाकुर नदी के किनारे की पहाड़ी को गन्धक पहाड़ी कहते हैं। नदी से गन्धक की गन्ध आती है। दाद, खाज, खुजली होने पर इसी स्थान पर नहाते हैं। भले ही गुफा की खोज अभियान है लेकिन स्थानीय लोग इससे पहले से परिचित हैं।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

13वें आनन्द बल्लभ उप्रेती स्मृति समारोह की झलकियां

स्वागतगीत प्रस्तुत करते युवा कलाकार

पत्रकार पंकज जोशी 'विशेष' को आनन्दश्री सम्मान

आईजी करन सिंह नगन्याल का स्वागत करते हुए फली सिंह दताल

हिमालय संगीत शोध समिति के बाल कलाकारों की समूह प्रस्तुति

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

लोसर पर्व उत्साह के साथ मनाया गया

नैनीताल। शहर में तिब्बती समुदाय का प्रमुख पर्व लोसर (तिब्बती नववर्ष) उत्साह के साथ मनाया गया। शेर का डांडा पहाड़ी स्थित बौद्ध मठ में सामूहिक पूजा के साथ ही धार्मिक ध्वज बदले गये, जिसे शुभ और मंगलकारी माना जाता है। नैनीताल के इस मठ का सम्बन्ध भूटान के शाही परिवार से जुड़ा है। इसकी स्थापना 1976 में हुई। इसमें पहले भूटान की रानी का का स्वामित्व बताया जाता है, जिसे उन्होंने आस्था स्थल के रूप में दान कर दिया।

बैगुल नदी पर बनेगा पुल

सितारगंज। गाँव निर्मल नगर और राजनगर को गाँव सिसौना से जोड़ने के लिए पुल निर्माण को 11.40 लाख रुपये की वित्तीय और प्रशासनिक स्वीकृति मिल चुकी है। शासन ने बैगुल नदी पर पुल निर्माण के लिए दस हजार रुपये की टोकन राशि भी जारी कर दी। शक्तिफार्म के लोग लम्बे समय से इसकी मुांग कर रहे थे।

गदरपुर विधायक ने प्रशासन को सीमांकन की चुनौती दे डाली

रुद्रपुर/गदरपुर। प्रदेश के पूर्व मंत्री व गदरपुर विधानसभा से विधायक अरविन्द पाण्डे लगातार चर्चा में बने हुए हैं। अपनी ही सरकार पर सवाल उठाने वाले विधायक के परिवार पर जब जमीन सम्बन्धी मामला दर्ज हुआ उसके बाद से वह और भी खुलकर सामने हैं।

गूलरभोज स्थित उनके कैम्प कार्यालय पर प्रशासन द्वारा अतिक्रमण का नोटिस दिए जाने के बाद मामला अब नए मोड़ पर है। नोटिस की अवधि बीतने के बावजूद कार्रवाई न होने पर विधायक ने स्वयं मोर्चा खोलते हुए प्रशासन को पत्र लिखकर स्पष्ट किया है कि उनकी उपस्थिति में कार्यालय का सीमांकन कराया जाए। उन्होंने घोषणा की कि यदि भूमि सरकारी पाई जाती है तो प्रशासन उसे तत्काल कब्जे में ले ले, इसमें उन्हें या उनके वारिसों को कोई आपत्ति नहीं होगी। राजनीति विश्लेषक इसे 2027 चुनाव से पहले विरोधियों को दिया गया एक बड़ा नैतिक जवाब मान रहे हैं। बताते चलें कि विधायक कांग्रेस पार्टी के भी बराबर सम्पर्क में हैं।

लोहाघाट की नजूल भूमि पर रोक

लोहाघाट। नगर की 166 एकड़ नजूल भूमि के अवैध क्रय-विक्रय पर प्रशासन ने रोक लगा दी है। स्टाम्प पेपर पर लेन देन करने वालों के विरुद्ध सख्त कार्रवाई होगी। उप जिलाधिकारी नीतू डांगर ने बताया कि लोहाघाट नगर सीमा के अन्तर्गत आने वाली 3320 नाली चार मुट्ठी (लगभग 166 एकड़) भूमि के रूप में दर्ज करने और इसका प्रबन्धन नजूल नीति के अनुरूप करने की स्वीकृति कर दी है।

एसडीएम ने बताया ि जब तक उक्त भूमि फ्री-होल्ड नहीं हो जाती, तब तक इस भूमि पर काबिज किसी भी व्यक्ति को इसे हस्तान्तरित करने, बेचने या खरीदने का कोई विधिक अधिकार नहीं है। बताया कि प्रशासन के संज्ञान में आया है कि कुछ व्यक्ति नगर क्षेत्र की सरकारी नजूल भूमि को स्टाम्प पेपर के द्वारा अवैध रूप से क्रय-विक्रय कर रहे हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि इस प्रकार का लेनदेन पूरी तरह नियम विरुद्ध है। ऐसा कृत्य दण्डनीय अपराध की श्रेणी में आता है और इसमें सॅलिप्त सभी पक्षों के विरुद्ध सख्त कानूनी कार्रवाई होगी।

छात्रों ने परिसर निदेशक कार्यालय में जड़ा ताला

अल्मोड़ा। सोबन सिंह जीना परिसर प्रशासन पर छात्रों ने भ्रष्टाचार का आरोप लगाते हुए परिसर निदेशक कार्यालय पर ताला जड़ दिया। छात्रों ने निर्माण कार्य की जाँच करने और दोषियों पर कार्रवाई करने समेत अन्य समस्याओं के निदान की मांग उठाई। कहा मांगें पूरी न होने पर उग्र आन्दोलन किया जाएगा।

मसूरी वन प्रभाग समाप्ति का विरोध

मसूरी। मसूरी वन प्रभाग को समाप्त कर जौनपुर क्षेत्र को नरेन्द्र नगर वन प्रभाग व मसूरी को देहरादून वन प्रभाग में शामिल किए जाने के प्रस्ताव का जौनपुर की जनता ने विरोध किया है। क्षेत्र के जनप्रतिनिधियों ने प्रधानसंघ के अध्यक्ष प्रदीप कवि के नेतृत्व में मसूरी वन प्रभाग कार्यालय प्रांगण में धरना दिया। कहा कि जौनपुर विकासखण्ड की चार रेंजों को पुनर्गठन के तहत इसे मुनी की रेती वन प्रभाग से जोड़ा जा रहा है, जबकि यह क्षेत्र मसूरी से जुड़ा है।

पूर्णागिरी में रोपवे का काम तेज होगा

टनकपुर। डीएम मनीष कुमार ने पूर्णागिरी रोववे परियोजना का स्थलीय निरीक्षण करते हुए कार्यदायी संस्था को निर्माण कार्य में गुणवत्ता, सुरक्षा मानकों और समयबद्धता से कार्य करने पर जोर दिया। पूर्णागिरी धाम में दिल्ली की के.आर. कंस्ट्रक्शन लिमिटेड इस परियोजना की निर्माण एजेंसी है। इस दौरान प्रोजेक्ट मैनेजर महेन्द्र राठौर ने बताया कि रोपवे की कुल लम्बाई 950 मीटर होगी, इसमें दो ट्रालियां संचालित होंगी। प्रत्येक ट्राली में एक समय में 65 लोग सवार हो सकेंगे। यह रोपवे एक टर्मिनल से दूसरे टर्मिनल तक लगभग 250 मीटर की ऊंचाई पर मात्र सात मिनट में पार करेगा। प्रति घण्टा 800 से अधिक लोगों की सुगम आवाजाही सुनिश्चित हो सकेगी। इसके संचालन से हनुमान चट्टी से काली मन्दिर तक लगभग 6 किमी का पैदल और सड़क की दूरी कम हो जाएगी।

परिक्रमा

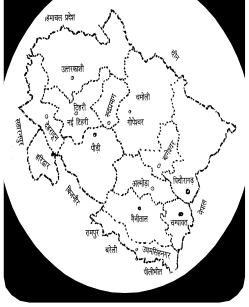

उडियारी में शराब की दुकान का विरोध हुआ

बेरीनाग। विकासखण्ड के उडियारी बैंड में शराब की नई दुकान खोलने का भारी विरोध हुआ है। प्रधान हेमा देवी के नेतृत्व में ग्रामीणों ने प्रदर्शन करते हुए कहा कि लोग पानी के लिये संघर्ष कर रहे हैं उन्हें शराब की ओर ले जाया जा रहा है। कहा जब तक शराब की दुकान खोलने का फैसला वापस नहीं लिया जाता, तब तक धरना-प्रदर्शन होगा।

प्लाईबुड कम्पनी में आयकर टीम का छापा

रुद्रपुर। दिल्ली की आयकर विभाग टीम ने शहर के दो स्थानों पर छापामार कार्रवाई की और सिडकुल की नामी गिरामी प्लाईबुड कम्पनी प्रबन्धक से घण्टों पूछताछ की। इस दौरान टीम ने कई अहम दस्तावेज भी अपने कब्जे में लेकर आय सम्बन्धी जानकारी ली। इससे कारोबारियों में हड़कम्प मचा है।

चम्पावत सरस कार्बेट महोत्सव में थिरके

चम्पावत। इस बार चम्पावत सरस कार्बेट महोत्सव का सरकारी आयोजन किया गया। इसका बर्चुअल उद्घाटन मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने करते हुए सभी को बधाई दी और चम्पावत को मानचित्र पर विशेष चमकाने की बात कही। आयोजन को लेकर जिला प्रशासन ने पूरी तरह कमर कसी थी और आयोजन स्थल पर स्टालों के अलावा बच्चों की प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। स्थानीय स्कूलों की प्रतियोगिता व प्रदर्शन के अलावा रात्रि में आमंत्रित कलाकारों की प्रस्तुति देखने को मिली। मंच पर कलाकारों के साथ उपस्थित जन भी थिरके। आयोजन के दौरान नई ऊर्जा, उत्साह और जन भागीदारी के साथ खुशहाल किसान, समृद्ध राष्ट्र की थीम को समर्पित कार्यक्रम में आधुनिक कषि तकनीक की जानकारी भी दी गई। योग के साथ ही पैराग्लाइडिंग व राफ्टिंग के रोमांचक आयोजन का नजारा भी रहा।

बीडीसी बैठक में हंगामा, बहिष्कार

अल्मोड़ा। हवालबाग ब्लाक की पहली बीडीसी बैठक हंगामे की भेंट चढ़ गई। जिला स्तरीय अधिकारियों के नहीं पहुंचने पर जनप्रतिनिधियों ने बैठक का बहिष्कार किया। प्रधान संगठन के अध्यक्ष देवेन्द्र सिंह ने बताया कि प्रधानों ने प्रशासन के खिलाफ निन्दा प्रस्ताव जारी कर दिया। साथ ही 15 दिन के अन्दर बैठक कराने का अल्टीमेटम भी दिया।

चारधाम यात्रा किराया नहीं बढ़ेगा

हरिद्वार। चारधाम यात्रा में बसों का संचालन करने वाली संयुक्त रोटेशन यात्रा व्यवस्था समिति यात्रा में बसों के किराए में कोई वृद्धि नहीं नहीं करेगी। राज्य में पंजीकृत बसें रोटेशन के तहत यात्रा में चलेंगी। दस परिवहन कम्पनियां यात्रा के दौरान संयुक्त रोटेशन यात्रा व्यवस्था समिति के तहत बसों का संचालन करती हैं।

सम्यक् विचार- 159

कन्यादान के विषय में

आजकल कुछ क्षेत्रों में और कुछ जातियों में कन्यादान माता-पिता स्वयं न करके कन्या के मामा, फूफा, मौसा या अन्य किसी रिश्तेदार के हाथों करवाते हैं। यह प्रथा सर्वथा अनुचित है। कुछ लोगों को तो कन्यादान शब्द से ही घृणा है। मेरे विचार से-

1. जिन लोगों को कन्यादान शब्द अनुचित प्रतीत होता है उनके लिए धार्मिक विधि से विवाह सम्पन्न करना सम्भव नहीं है। उनके लिए दो ही मार्ग बचते हैं, या तो 'लिव इन रिलेशन' या फिर कोर्ट मैरिज।

2. माता पिता के जीवित रहते उनकी पुत्री का कन्यादान कोई अन्य व्यक्ति नहीं कर सकता। यदि माता-पिता जीवित नहीं हैं तो कन्यादान ताऊ अथवा चाचा कर सकते हैं। यदि वे भी नहीं हैं तो बड़े भाई, यदि विवाहितहै तो, कन्यादान कर सकता है।

3. मौसा, मामा, फूफा आदि तो कन्यादान कर ही नहीं सकते क्योंकि उनका गोत्र भिन्न होता है। यदि वे ऐसा करते हैं तो धर्म के अनुसार कन्यादान का पुण्य मिलना तो दूर की बात है बल्कि वे दूसरे की कन्या का दान (अर्थात् दूसरे की वस्तु का स्वयं दान) करने के कारण पाप के भागी होते हैं।

4. अपनी कोई पुत्री न होने के कारण यदि कोई व्यक्ति अपने ही गोत्र की अधिकतम पाँच वर्ष की कन्या को विधि पूर्वक गोद लेता है तो ही वह कन्यादान का पुण्य प्राप्त कर सकता है अन्यथा नहीं।

5. हिन्दू धर्मशास्त्रों में कन्यादान सर्वश्रेष्ठ दान माना गया है। यह प्रत्येक व्यक्ति के लिए आवश्यक होता है अन्यथा अगले जन्म में उसका विवाह नहीं होता है।

-ओंकार नाथ कोष्टा

ज्योतिष की बातें- 271

11 मार्च 2026 को शनि मीन राशि में पश्चिम दिशा में अस्त हो जाएगा अत: अगले 27 दिन शनि से प्राप्त होने वाले शुभाशुभ फल अब अल्पमात्र में ही प्राप्त होंगे।

11 मार्च 2026 को अभी तक वक्री चल रहा गुरु मिथुन राशि में मार्गी हो जाएगा अत: गुरु से प्राप्त होने वाले शुभाशुभ फल अब सभी जातकों को सामान्य रूप से प्राप्त होंगे।

15 मार्च 2026 को सूर्य मित्रराशि मीन में प्रवेश करेगा। वहाँ पर शुक्र से युति भी होगी। कुल मिलाकर सूर्य बली रहेगा। अत: अगले एक माह सूर्य स्वास्थ्य, सम्मान आदि अपने कारक विषयों में मकर, तुला, मिथुन व वृषभ राशि के जातकों को अत्यन्त शुभफल प्रदान करेगा।

खरमास प्रारम्भ- सूर्य के मीन राशि में आने से खरमास प्रारम्भ होता है अत: शनिवार 15 मार्च 2025 से एक माह तक गृहप्रवेश आदि शुभकार्य तथा विवाह संस्कार आदि मंगलकार्य स्थगित रहेंगे।

शीतलाष्टमी- चैत्र कृष्णपक्ष की नवमीयुता अष्टमी तिथि को शीतलाष्टमी का पर्व मनाया जाता है। अत: बुधवार 11 मार्च 2026 कोष्ठ त्वचा रोग, चेचक, फोड़ा-फुंसी आदि के निवारणार्थ शीतलाष्टकम् का पाठ कर शीतला माता की पूजा अर्चना करनी चाहिए।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा
ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

मधुर है बृहदारण्य...

प्रथम पृष्ठ का शेष

उनका नाम है ब्राह्मण। तो पहले अध्याय के चौथे व ब्राह्मण में आत्मा को लेकर कुछ बहुत ही आधारभूत बातें बहुत ही रोचक शैली में बता दी गई हैं। मानो उसकी शक्ल एक मनुष्य जैसी थी। उस आत्मा ने चारों ओर देखा तो उसे अपने अलावा कोई नहीं दिखा तो वह कहने लगा कि अरे, यहाँ तो सिर्फ मैं ही मैं हूँ- 'अहम अस्मि' तो बस मानो इसी से उसके अन्दर अंहकार पैदा हो गया। यहीं अहंकार सारी दुविधाओं और संकटों की जड़ है इसलिए जैसे ही आत्मा को अहंकार हुआ तो उसमें भय ने जन्म लिया। इस मौके पर उपनिषद अपनी शैली में रोचकता के मानो शिखर पर है। जब डर लगा तो आत्मा ने चारों ओर देखा और देखा कि यहाँ तो उसके अलावा और कोई था ही नहीं और जब दूसरा कोई था ही नहीं तो डर कैसा क्योंकि डर तो किसी और से लगता है। बस यह सोचते ही उसका डर भाग गया। तो सन्देश क्या है? यही कि डर हो या मोह या क्रोध या कुछ भी, वह तभी आता है जब अपने अलावा यानी आत्मा के अलावा किसी और का अस्तित्व भी मान लिया जाए। दूसरे का ही क्यों, बल्कि अपना अस्तित्व मान लेने से भी अहंकार पैदा हो जाता है जो फिर हर तरह के बन्धन को जन्म देता है। क्या अहंकार और उससे पैदा होने वाले भय आदि बन्धनों को समझाने का इससे आसान तरीका और हो सकता है?

तो क्या करता वह अकेला? आज की भाषा में कहें तो बोर ही होता रहता। किताब के पहले अध्याय के चौथे ब्राह्मण में ठीक इसी शैली का अनुकरण करते हुए उपनिषदकार ने हमें समझाने की कोशिश की है कि इस समस्त सृष्टि का मूल कारण वही एक तत्व है- आत्मतत्व जिसे आगे चलकर व ह्यातत्व का पर्यायवाची मान लिया गया है। जरा शैली देखिए- स बै नैव रेमे (उस अकेले को भला मजा आता ही कहाँ है?), स द्वितीयमैच्छत (उसने कहा कि एक साथी भी तो होना चाहिए)। पर सवाल है दूसरा होता कौन? इस सवाल का जवाब, यानी दार्शनिक जवाब भी उपनिषदकार ने पूरी रोमांटिक शैली में दिया है। क्या है जवाब?- यथा स्त्रीपुमांसौ संपरिष्वक्तौ (जैसे पुरूष और स्त्री एक दूसरे के आलिंगन में गुंथे पड़े होते हैं), स इममेवात्मानंद्वेधा पातयत्तथा पतिंश्च पत्नी चाभवताम, (वैसे ही उसने खुद को पति और पत्नी इनप दो रूपों में बाँट दिया) और जाहिर है कि इसके बाद सृष्टि हुई और आत्मा का अकेलापन दूर हो गया। दार्शनिक सन्देश यह है कि समस्त ब्रह्माण्ड में परमतत्व तो बस एक ही है, आत्मा, और जो सृष्टि हमें चारों ओर बिखरी दिखाई देती है वह हमारे संकल्प का ही नतीजा है। पर वह वास्तव में है कहाँ?

सारा बृहदारण्यकोपनिषद इसी शैली में है। संक्षिप्त, सारभूत और मजेदार। पर इस उपनिषद की अपनी आत्मा उस ब्रह्मसभा में है जो राजा जनक की मिथिला में सजी थी। वहाँ आठ ब्रह्मवेत्ताओं ने याज्ञवल्क्य से बड़ी ही पैने सवाल पूछे थे। गार्गी भी पूछने वालों में एक थी जिसने दो चार सवाल पूछे थे। चूँकि बात सीधे बृहदारण्यकोपनिषद की हो रही है, इसलिए उन सवाल-जवाबों से संक्षेप में परिचित न होंगे तो खुद को इस उपनिषद की और ब्राह्मसभा के नायक याज्ञवल्क्य की महानता से हम वंचित ही रखेंगे। सजी है ब्रह्मसभा। जनक ने कहा कि जो इस सभा में खुद को सर्वश्रेष्ठ ब्रहमज्ञ साबित करेगा, ये हजार गऊएँ उसकी की- ये वां हियष्ठः स एता गा उदजताम। किसी में आगे आने की हिम्मत नहीं हुई- ते ह ब्राह्मणा न दधृषुः। पर याज्ञवल्क्य? वे मस्त थे, और भरे हुए थे आत्मविश्वास से। अपने शिष्य से बोले, ले जा सौम्य सामश्रवा इस गउओं को हमारे आश्रम की ओर याज्ञवल्क्यः स्वमेव ब्राह्चारिणमुवाच एताः सौम्य उदज सामश्रवः। वह ले चला तो फिर तमाम ब्राह्मण गुस्से से भर गए- ता ह उदाचकार, ते ह ब्राह्मणाः चक्रुधुः। बोले, तुम कैसे हो गए सर्वश्रेष्ठ ब्राह्मवेत्ताकथं ब्राह्मिष्ठः?

तो शुरू हुए सवाल जवाब। पहला सवाल दागा होता अश्वल ने। पूछा कि सभी लोग जिस मौत के मुँह में चले जाते हैं, वह मौत फिर किसके मुँह में जाती है, यानी उसे कैसे जीतें- यदिदं सर्व मृत्युना, आप्तं, सर्व मृत्युना अभिपन्नं, केन यजमानी मृत्योराप्तमतिमुच्यते? दूसरा सवाल था जागत्कारव आर्तभाग का, कुछ अजीब सा तात्कालिक सन्दर्भों के आधार पर पूछा गया लगता है। सवाल है- कौन से हैं आठ ग्राह और आठ अतिग्राह, ये ते अष्टौ ग्रहाः अष्टौ अतिग्रहा, कतमे ते? तीरा सवाल किया लाह्या के बेटे भुज्यु ने। कहा कि हम एक बार मद्रदेश में घूम रहे थे तो किसी ने हमसे सवाल किया- कहाँ गए वे परीक्षित के वंशज? कहाँ गए परीक्षित के वंशज? वही सवाल था चौथा, और पूछने वाले का नाम है उषस्त चांक्रायण। बोले, याज्ञवल्क्य, बताओ तो वह आत्मा क्या है जो सबके भीतर भी है और बाहर भी, यत्साक्षात अपरोक्षात ब्राह्म आत्मा अवन्तिरः तं में व्याचक्ष्व। पाँचवा सवाल कहोल कौषीतकेय ने किया। कुछ चौथे सवाल जैसा। कहा कि जिस आत्मा को जानकर मनुष्य भूखा, प्यासा और जीवन मृत्यु को लाँघ जाता है, उसके बारे में बताओ। छठा सवाल किया था गार्गी वाचक्नवी ने। उसने दो बार सवाल किए थे। सारा किस्सा गार्गी पर लिखते वक्त विस्तार से बता आए हैं। फिर से बताना जरूरी नहीं है ना? सातवाँ सवाल उद्दालक आरूणि का था, बताओ कौन है अन्तर्यामी जो सभी शरीरों में अलग अलग रहता हुआ भी धागे की तरह एक है, तत सूत्रं च अन्तर्यामिणं च वेद? आठवें और आखिरी धुरंधर थे विदग्ध शाकल्य। बोले, बताओ तो कौन है ओंकार?

अरे बाप रे, इतने सारे सवाल? और वे भी इतने तरह के? पर याज्ञवल्क्य ने जिस आत्मविश्वास से हजार गउएँ हाँक ले जाने को अपने शिष्य को कहा था, उसी आत्मविश्वास से उसने सभी प्रश्न कर्ताओं को अपने उत्तरों से सौ टंच सन्तुष्ट भी किया और ब्रम्मिष्ठ की पदवी पाई तो क्या थे याज्ञवल्क्य के जवाब? तीसरे अध्याय के नौ ब्राह्मणों में ये तमाम जवाब लिखे पड़े हैं। अगर हमने मेहनत से सारे जवाब पढ़े हैं तो क्या आप भी वह मेहनत नहीं करना चाहेंगे? कृपया जरूर करिए और सिर्फ तीसरा अध्याय ही क्यों? जब पढ़ने बैठे तो बृहदारण्यकोपनिषद नामक विराट दार्शनिक ग्रन्थ के सभी छहों अध्याय पढ़ जाइए। इसी में सार्थकता है।

(साभार नवभारत टाइम्स)

दिखावे की भेंट चढ़ा होली का त्यौहार

चुनाव की तैयारी में अपने-अपने तीर चलाते नेता फिर से बेलगाम दिखाई दिये

होली का त्यौहार निपट चुका है और ग्रीष्म होने लगी है। साथ ही ले-देकर विधानसभा चुनाव 2027 की ओर ध्यान लगाया जा रहा है। होली-2026 की पड़ताल करें तो पूरे उत्तराखण्ड में धूम तो अपनी जगह थी लेकिन पूरा त्यौहार दिखावे की भेंट चढ़ गया। चुनराव की तेयारी में जुटे नेता अपने-अपने तीर चलाते हुए बेलगाम दिखाई दिये।

उमंग से ज्यादा दिखावे का जुनून

पिछले कुछ वर्षों से जिस प्रकार का प्रचलन बढ़ता जा रहा है कि कोई भी त्यौहार को अपने प्रचार का साधन बनाने वाले नेता और छुटभैये अपनी घेराबाड़ी करने लगे हैं। अपने प्रचार के लिये कलाकारों की भीड़ भी बुलाई जाती है ताकि वह उनके मुताबिक गीत गाकर जैजैकार करें। इन सबके बीच उमंग से ज्यादा दिखावे का जुनून ज्यादा सर चढ़ चुका है। कहने को तो होली के महादंगल से हो रहे थे लेकिन इनकी सच्चाई यही है कि किसी प्रकार आयोजन सम्पन्न हों। चूंकि असल गायक-वादक गिनती भर के हैं और पलायन से विरान ग्रामों का हाल भी बुरा है। ऐसे में जरूरत इस बात की है कि रहे-बचे असल कलाकारों को सम्मान दिया जाए और दिखावे के रंग भरने वालों को लीक पर चलने को कहा जाए। हंसी-ठिठोली के इस मौके पर किसी को कुछ कहना भी अब कड़वा लगने लगा है। मीडिया भी इन सारी सच्चाईयों पर पर्दा डालने लगे हैं जबकि अपनी समृद्ध परम्पराओं की सच्चाई को आगे लाना होगा।

होली पर पहाड़ के देवालयों और चीर बन्धन के तय स्थानों पर परम्परागत रूप से आयोजन हुए। प्रवासी भी अपने घरों पर आकर जुटे, इस प्रकार के चहल पहल वाले ग्रामों में उत्साह दिखाई दिया। महानगरों में होली की बैठकी का जोर दिखाई दिया। जिसमें नौसिखिए और सोशल मीडिया पर हाबी रहने वालों का ज्यादा जमावड़ा दिखाई दिया। कुल मिलाकर होली का रंग खूब चढ़ा परन्तु त्यौहारों की मूल भावना को आगे बढ़ाने के लिये सबको जुटना होगा।

HIMALAYAN MUNSYARI STORE
Johar Nagar, Bhotia Padav, Haldwani
(एक छत के नीचे अपने हस्तशिल्प, कुटीर उद्योग के उत्पादों का विश्वसनीय प्रतिष्ठान)
मो.- 8755116161. 84779321316 वीरेन्द्र सिंह मपवाल

घर से बाहर अपनों का साथ
होटल लक्ष्य इन
मदकोट
नरेन्द्र सिंह रावत
सम्पर्क 7351285555

जंगपांगी जनरल स्टोर
मदकोट रोड, दरांती मनुस्यारी
(सीमेन्ट, पेण्ट, हार्डवेयर सामग्री के लिये सुलभ स्थान)
मो.- 9760342346

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर
नानासेम, मुनस्यारी
मो.न. 8958525979, 9411134775
फोन सम्पर्क- 05961-222236
गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स
हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

.....बनभूलपुरा.....

सुरक्षा व्यवस्था के लिये चौकन्ने जवान

हल्द्वानी। वनभूलपुरा में राज्य सरकार व रेलवे की भूमि पर अतिक्रमण मामले में सुप्रीम कोर्ट के निर्देश के बाद सुरक्षा व्यवस्था के लिये जवान चौकन्ने हैं। रेलवे सुरक्षा बल (आरपीएफ) ने पूरे रेलवे क्षेत्र की सुरक्षा बढ़ा दी है। अतिक्रमण हटने व पुनर्वास की प्रक्रिया के समय यूपी से भी आरपीएफ के जवान बुलाने की तैयारी है।

पूर्वोत्तर रेलवे इज्जतनगर माण्डल के अन्तर्गत आने वाले हल्द्वानी रेलवे स्टेशन से लगे बनभूलपुरा क्षेत्र पर अतिक्रमण हटाना प्रशासन के लिये बड़ी चुनौती है। इसके लिये आरपीएफ द्वारा प्रारम्भिक स्तर पर तैयारी की गई है। सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद तो साफ ही है कि 31 मार्च तक जिला प्रशासन को यहाँ पात्रता के दायरे में आने वाले लोगों को पीएम आवास योजना से जोड़ने के निर्देश दे दिये गये हैं।

पुलिस की ओर से भ्झी सुरक्षा व्यवस्था को लेकर तैयारियां की जा रही हैं। इलाके का माहौल अशान्त न हो इसके लिये 2024 में हुए बनभूलपुरा दंगे के 110 उपद्रवियों व क्षेत्र के 31 हिस्ट्रीशीटरों की सूची तैयार की गई है। इनके इन्टरनेट मीडिया अकाउंट से लेकर उनकी क्षेत्र में गतिविधियों पर खूफिया विभाग की नजर है। इसके अलावा प्रशासन द्वारा रात्रि 11 बजे बाद क्षेत्र की दुकानों को बन्द करवाया जा रहा है। इस पूरी कसरत में क्षेत्र के लोगों में बेचैनी होना स्वाभाविक है। बताते चलें कि रेलवे की भूमि पर कब्जा हटाने को लेकर लम्बे समय से चल रही लिखापढ़ी के बाद अन्ततः जिस प्रकार का निर्णय बना है उससे आने वाले दिनों के हल्द्वानी का यह क्षेत्र पूरी तरह बदल जाएगा। प्रशासन इसके लिये तैयारी में जुटा है।

वह महफिल-मजलिस-जगमग इतिहास बन जाएंगे

हल्द्वानी का बनभूलपुरा क्षेत्र जब बसना शुरू हुआ था तब बंजारों के अपने तरीके और तहजीब इसमें दिखाई देते थे। धीर-धीरे इसमें गलियों का जो विकास हुआ उसमें आबादी बढ़ती चली गई। साथ ही रेलवे पटरी की ओर झुग्गी बनाकर रहने वाले भी आने लगे। बाद के वर्षों में जमीन घेरने वालों की नीयत भी पटरी की जमीन पर रही और इसमें ही सौदे करने लगे। इनके बीच ही घूम-घूम कर जीवन यापन करने वाले ढोलक बस्ती के रूप में एक जगह जमा हो गये। नेताओं का संरक्षण सभी को मिला क्योंकि सारी जमात वोटर भी है।

इस बढ़ी आबादी के बीच रातभत बनभूलपुरा क्षेत्र की रौनक रात्रि में ज्यादा जगमग होने का रिवाज रहा है। रात्रि में ही यहाँ महफिल-मजलिस सजती रही हैं। मुशायदे के यादगार आयोजनों में मशहूर शायद बाहर से भी आते रहे हैं। उर्स के मौके पर कब्बाल-उस्ताद भी दिखाई देते रहे हैं। रात्रि में होने वाली सभाओं-जलसों में ऐलान करने वाले नेता आते रहे हैं। मेहनत-मजदूरी करने वालों से लेकर बदमाशी करने वाले तक इस इलाके में अपना अड्डा बनाकर चुके थे। एक अजब ही दुनिया इस क्षेत्र की दिखाई देती रही है। अब जिस प्रकार से रेलवे जमीन खाली होनी है वह सबकुछ इतिहास बन जाएंगे।

राजनीति के सारे समीकरण अब नये होंगे

हल्द्वानी विधानसभा सीट हमेशा से चर्चित रही है। एनडी तिवारी, केसी पन्त जैसे नेताओं का नाम इसमें जुड़ा है। इसके बाद इन्दिरा हृदयेश का दबदबा हल्द्वानी क्षेत्र में सबने देखा। समय के साथ सीटों में जो बदलाव हुआ उसमें कालाढूंगी सीट अलग हो गई और हल्द्वानी विधान सभा का आकार उस स्थिति में आ चुका था कि कांग्रेस को लाभ होना आसान हुआ। हमेशा से कांग्रेस का दबदबा वाली इस सीट पर बनभूलपुरा का मतदान एकतरफा मतदान उसे मददगार रहा है। ऐसे में कालाढूंगी सीट बनने से पहले नाराज लोगों ने दमदार नेता इन्दिरा हृदयेश को नकारते हुए बंशीधर भगत को अवसर दिया। उस समय मोहन पाठक निर्दलीय खड़े होकर कांग्रेस को नुकसान पहुंचाया था। इसके बाद फिर से कांग्रेस का दबदबा हुआ। इन्दिरा के निधन के बाद कांग्रेस के टिकट पर सुमित हृदयेश विधायक बने और लगातार उनका जोर बनभूलपुरा पर रहा है। लेकिन अब जबकि आबादी का बड़ा हिस्सा पुनर्वास में दूसरी जगह जाएगा तो राजनीति के सारे समीकरण नये होंगे। इसका मतलब यह भी नहीं है कि मुस्लिम आबादी के हटने से भाजपा की राह आसान होगी।

रेलवे लाइन से लगे बड़ी आबादी के हटने पर राजनीति के समीकरणों में कितना बदलाव होगा वह आने वाले दिनों में दिखाई देगा क्योंकि भाजपा और कांग्रेस दोनों ही बड़ी पार्टियों को एकदम नये सिरे से अपने चेहरे तलाश करने होंगे। बगावत करने वाले और अन्य खड़े होने वालों के कारण भी चुनाव गणित रोमांचक होगा।

न तेरा न मेरा Thats
APNA GHAR चौकोड़ी
HOTEL RESTRO BANQUET
मो.- 9458920379, 6396098804
YOGA MEDITATION | LIVE MUSIC | HOMELY FOOD | BIRTHDAY WEDDING
Near by- (माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)
पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया

Hotel Bala Paradise
Tiksain, Munsiari
Ph. 05961222237, 9412951678

धमोत होम स्टे
धरमघर/चकोड़ी
(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग, माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)
मो. 9760007148
www.mountainheights.in

पिघलता हिमालय के साथ बढ़ते कदमों के साथ-
मोहन सिंह धर्मशक्तू
5/17 जोहार नगर
भोटिया पड़ाव, हल्द्वानी

कवीन्द्र सिंह पांगती
नन्दा होम्स
कमलुवागांजा रोड, कुसुमखेड़ा
हल्द्वानी

गोकर्ण सिंह मर्तोलिया
ग्राम बूंगा (मेन मार्केट)
मुनस्यारी

धाम सिंह बरफाल
ग्राम पो. मल्ला दुम्मर
मुनस्यारी

डॉ.मंगल सिंह मर्तोलिया
(निकट- सयाना भवन)जोहार नगर
भोटिया पड़ाव, हल्द्वानी

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।

सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/मोबाइल 9458961490, 9411770280, 9411301014,
editorpighaltahimalay@gmail.com
Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)